



Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 30 जुलाई, 2021

राष्ट्रीय कसिन डेटाबेस

केंद्रीय कृषि एवं कसिन कल्याण मंत्रालय द्वारा की गई हालया घोषणा के मुताबिक, सरकार डिजिटल भूमि अभियानों का उपयोग कर एक 'राष्ट्रीय कसिन डेटाबेस' की स्थापना की जोना बना रही है। यह राष्ट्रीय डेटाबेस कसिनों को सक्रिय एवं व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करेगा। साथ ही सरकार इस डेटाबेस में कसिनों के व्यक्तिगत विवरण संबंधी डेटा की गोपनीयता भी सुनिश्चित करेगी। इस पहल का उद्देश्य उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर समाधान विकास करके कसिनों की आय में वृद्धि करना है। 'राष्ट्रीय कसिन डेटाबेस' यह सुनिश्चित करेगा कि इनपुट लागत में कमी किया जाने से गुणवत्ता में सुधार हो, कृषि गतिविधियों को आसान बनाया जा सके और कसिनों को उनके कृषि उत्पाद का बेहतर मूल्य मिल सके। यह डेटाबेस सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करने हेतु ऑनलाइन साइन-इन सुविधा प्रदान करेगा और कसिनों को व्यक्तिगत एवं सक्रिय सेवाओं जैसे- मटिटी व पौधों की सावास्थ्य सलाह, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, साचाई सुविधाएँ, मौसम संबंधी सलाह, बीज, उर्वरक, बाजार पहुँच की सूचना, ऋण देने की सुविधा, कृषि उपकरण आदि प्रदान करेगा। वहीं यदि केंद्र सरकार पहले से ही ऐसी व्यवस्था बना चुकी है, तो उसे केंद्र सरकार के डेटाबेस के साथ एकीकृत किया जाएगा तथा उसमें और अधिक सुधार किया जाएगा। वर्तमान में इस डेटाबेस के तहत केवल वे कसिन शामिल होंगे जो सरकारी रकिंड के अनुसार कृषि भूमि के कानूनी मालिक हैं। भूमिहीन कसिनों को इसमें शामिल नहीं किया जाएगा।

बसवराज बोम्मई

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्य के वरिष्ठ नेता बी.एस. येदियुरप्पा के इस्तीफे के बाद 'बसवराज बोम्मई' ने राज्य के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली है। बसवराज बोम्मई ने वर्ष 2008 से वर्ष 2013 के बीच राज्य के 'जल संसाधन मंत्री' और जुलाई 2019 से राज्य के गृह मंत्री के रूप में कार्य किया है। उत्तरी कर्नाटक के हावेरी ज़िले के 'शिंगांव' से तीन बार विधायक रह चुके 61 वर्षीय बसवराज बोम्मई, दिविगत पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री 'एस.आर. बोम्मई' के पुत्र हैं। बसवराज बोम्मई सक्रिय राजनीति में शामिल होने से पूर्व एक मैकेनिकल इंजीनियर थे, जिन्होंने पुणे में टाटा कंपनी के साथ अपने इंजीनियरिंग कर्यालय की शुरुआत की थी।

बाँस औद्योगिक पारक

असम के मुख्यमंत्री हमिंत बसिंग सरमा ने 'दीमा हसाओ' ज़िले के मंडेरडीसा में एक 'बाँस औद्योगिक पारक' की आधारशिला रखी है। इस परियोजना को 'मनिस्ट्री फॉर डेवलपमेंट ऑफ नारथ ईस्टर्न रीजन' द्वारा 50 करोड़ रुपए की लागत से क्रायिन्वाति किया जाएगा। 'बाँस औद्योगिक पारक' इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देगा और स्थानीय युवाओं के लिये रोजगार के व्यापक अवसर पैदा करेगा। ज़िले में उत्पादित बाँस अब तक केवल अधिकृत पेपर मलिं को निरियात किया जाता था, हालाँकि इस पारक के बन जाने के साथ ही ज़िले के बाँस उद्योग के लिये टाइलस और अग्रबद्धता आदि के उत्पादन में संलग्न होने के नए रास्ते खुलेंगे, जिससे स्थानीय लोगों को अधिक आरथिक लाभ प्राप्त होगा। वैश्वकि उद्योग रपोर्ट (2019) के मुताबिक, वैश्वकि सतर पर बाँस उद्योग का मूल्य तकरीबन 72.10 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो कवर्ष 2026 तक 98.75 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच सकता है। यद्यपि भारत के पास दुनिया के बाँस संसाधनों का 30% हसिसा मौजूद है, किंतु भारत अपनी बाँस क्षमता का केवल दसवें हसिसे का ही उत्पादन करता है, जो कवैश्वकि बाँस बाजार का केवल 4% है। असम संपूर्ण भारत में प्राकृतिक एवं घरेलू बाँस के प्रमुख स्रोतों में से एक है। असम में बाँस की 51 प्रजातियाँ उगाई हैं, यदि इसका उचित उपयोग किया जाए तो इसमें प्रयाप्त रोजगार और राजस्व उत्पन्न करने की क्षमता है।

'बृहस्पति' का 'गैनमीड' चंद्रमा

हबल सपेस टेलीस्कोप के डेटा का विश्लेषण कर शोधकर्ताओं ने हाल ही में 'बृहस्पति' ग्रह के सबसे बड़े चंद्रमा 'गैनमीड' के वातावरण में जलवाषप के साक्षय प्राप्त किये हैं। इससे पूर्व पछिले कई अध्ययनों में भी पाया गया था कि 'गैनमीड' में पृथ्वी की तुलना में अधिक पानी हो सकता है, किंतु चूँकि यह बेहद ठंडा है (-100 से -180 डिग्री सेल्सियस), इसलिये इसकी सतह पर पानी ठोस रूप में हो सकता है। यह अनुमान है कि इसकी सतह से लगभग 160 किलोमीटर नीचे हो सकता है। ऐसे में 'गैनमीड' पर जल की मौजूदगी के साक्षय, जीवन और रहने योग्य ग्रह की खोज में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। वर्ष 1998 में 'हबल' के 'सपेस टेलीस्कोप इमेजिंग सपेक्ट्रोग्राफ' (STIS) ने 'गैनमीड' की पहली पराईंगनी तस्वीरें ली थीं। उत्सर्जन का अध्ययन करने पर शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि 'गैनमीड' में स्थायी चुंबकीय क्षेत्र और कुछ परमाणु ऑक्सीजन मौजूद हैं। सूर्य से पाँचवीं पंक्ति में बृहस्पति, सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है जो अन्य सभी ग्रहों के मुकाबले दोगुने से अधिक बड़ा है। यह लगभग प्रत्येक 10 घंटे में एक बार धूरण (एक जोवयिन दिविस) करता है, परंतु सूर्य की परकिरमा (एक जोवयिन वर्ष) करने में इसे लगभग 12 वर्ष लगते हैं। बृहस्पति के पास 75 से अधिक चंद्रमा हैं।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/rapid-fire-current-affairs-30-july-2021>